ओ

		Ch.	Śl.
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म		8	13
ओं तत्सदिति निर्देशो		17	23

क

		Ch.	Śl.
कच्चिन्नोभयविभ्रष्ट:		6	38
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ		18	72
कट्वम्ललवणात्युष्ण		17	9
कथं न ज्ञेयमस्माभि:		1	39
कथं भीष्ममहं संख्ये		2	4
कथं विद्यामहं योगिन्		10	17
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि		2	51
कर्मण: सुकृतस्याहु:		14	16
कर्मणैव हि संसिद्धिम्		3	20
कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यम्		4	17
कर्मण्यकर्म य: पश्येत्		4	18
कर्मण्येवाधिकारस्ते		2	47
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि		3	15
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य		3	6
कर्शयन्त: शरीरस्थम्		17	6